सामाजिक मनोविज्ञान
(Social Psychology)

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

सामाजिक मनोविज्ञान
(Social Psychology)

डॉ. बालक राम राजवंशी

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

सामाजिक मनोविज्ञान
(Social Psychology)

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-80-2

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

सामाजिक मनोविज्ञान समाज में रहते हुए मनुष्य के सम्पूर्ण व्यवहारों एवं अनुभवों का अध्ययन करता है। इसलिए जैसे–जैसे मनुष्य का जीवन और समाज जटिलता की ओर अग्रसर हो रहा है, वैंसे–वैंसे सामाजिक मनोविज्ञान का क्षेत्र और भी अधिक विस्तृत एवं व्यापक होता जा रहा है। इसी कारणवश सामाजिक मनोविज्ञान को वर्तमान समय का अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रगतिशील की श्रेणी वाला विज्ञान माना जाने लगा है। इस विज्ञान का इतिहास अत्यधिक व्यापक एवं प्राचीन है। सामाजिक मनोविज्ञान के वर्तमान स्वरूप का विकास वर्तमान युग की ही देन है, किन्तु इसकी जड़े पुरातन में खोजी जा सकती हैं। सामाजिक मनोविज्ञान समाज में व्यक्ति के व्यवहार के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित है।

इस पुस्तक में मनुष्य के अनुभवों एवं व्यवहारों से सम्बन्धित तथ्यों के उदाहरण भारतीय सामाजिक जीवन के परिवेश से देने का प्रयत्न किया गया है। पुस्तक में प्रयोग की गयी शब्दावली, अधिकांशतः वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, भारत सरकार, नई दिल्ल्ली तथा शिक्षा एवं समाज कल्याण मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा अनुमोदित 'वृहत परिभाषिक शब्द संग्रह–मानविकी' पर आधारित है। पुस्तक की भाषा सरल एवं बोद्यगम्य रहे इस पर विशेष ध्यान रखा गया है। लेखक अपने अथक प्रयासों के आधार पर आशन्वित है कि यह पुस्तक देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के सामाजिक मनोविज्ञान स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर एवं समाजशास्त्र विषय के स्नातकोत्तर (एक प्रश्न पत्र के रूप में) के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

SAMPLE

पुस्तक लेखन में मेरी पत्नी श्रीमती पूनम शर्मा तथा पुत्र आराध्य राजवंशी, आरव राजवंशी की सहभागिता ने लेखन प्रक्रिया को कभी रूकने नहीं दिया। साथ ही पुस्तक के लेखन में एच0एन0बी0 गढ़वाल (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 जे0पी0 पचौरी, विभागाध्यक्षा प्रो0 रूकमा रावत, प्रो0 किरन डंगवाल, प्रो0 अखिलेश कुमार शुक्ला, डॉ0 जे0पी0 भट्ट तथा लखनऊ विश्वविद्यालय (उ0प्र0) के प्रो0 सुकान्त कुमार चौधरी, प्रो0 डी0आर0 साहू, प्रो0 राम गणेश यादव, डॉ0 रवीश कुमार सिंह, डॉ0 प्रतिभाराज तथा मित्रों में डॉ0 अमित कुमार वर्मा, डॉ0 राजीव कुमार, डॉ0 सुनील दीपक, डॉ0 राजेश कुमार यादव के अमूल्य योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

पुस्तक के लेखन में लेखक ने अपने प्रसिद्ध विद्वानों के ख्यातिप्राप्त ग्रन्थों एवं लेखों की सहायता ली है। यथास्थान उनका नामोल्लेख करते हुए भी उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना लेखक अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता है। इस पुस्तक की पाण्डुलिपि लिखने एवं त्रुटियों के निवारण की दृष्टि से पुनः सूक्ष्म दृष्टि से पढ़ने में मेरी स्नातकोत्तर की छात्राएँ ऋतु, आँचल बिष्ट, काजल, दिव्या रावत, सविता नौडियाल, सरिता, कविता, वर्षा चुनियाल ने विशेष रूचिलेकर सहायता की है।

यद्यपि लेखक ने पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने का यथासम्भव प्रयास किया है, लेकिन इसके वास्तविक मूल्याँकन के अधिकारी हैं सुविज्ञ पाठकगण। लेखक उनके सुझावों का सदैव स्वागत करेगा।

दिनांक
21.08.2019

डॉ. बालक राम राजवंशी
643N/139 नायक नगर
मोहिबुल्लापुर, सीतापुर रोड़,
लखनऊ (उ0प्र0), पिन–226021

हिंदी SAMPLE

विषय–सूची

	प्राक्कथन	*v*
1.	सामाजिक मनोविज्ञान : अवधारणा, क्षेत्र, प्रकृति एवं महत्व (Social Psychology : Concept, Scope, Nature and Importance)	1
2.	सामाजिक मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ (Study Methods of Social Psychology)	22
3.	सामाजिक मनोविज्ञान और अन्य सामाजिक विज्ञान (Social Psychology and Other Social Sciences)	49
4.	अनुकरण एवं सहानुभूति (Imitation and Sympathy)	69
5.	रूढ़ियाँ, अभिवृत्तियाँ और उनका माप (Stereotype, Attitudes and Their Measurement)	84
6.	अभिप्रेरण (Motivation)	113
7.	सीखना (Learning)	128
8.	व्यक्ति और समाज (Individual and Society)	146
9.	समाजीकरण (Socialization)	161

SAMPLE

10. व्यक्तित्व 208
(Personality)

11. सामूहिक व्यवहार एवं सामूहिक मन 234
(Collective Behaviour and Group Mind)

12. भीड़ एवं श्रोता–समूह 262
(Crowd and Audience)

13. प्रचार 293
(Propaganda)

14. अफवाह 322
(Rumour)

15. फैशन, स्टाइल, धुन और उन्माद 335
(Fashion, Style, Fad and Craze)

16. पूर्वधारणा 344
(Prejudice)

17. नेतृत्व 360
(Leadership)

18. जनमत एवं जनता 378
(Opinion and Public)

सन्दर्भ *404*
(References)

नमूना • SAMPLE

1

सामाजिक मनोविज्ञान : अवधारणा, क्षेत्र, प्रकृति व महत्त्व
(Social Psychology: Concept, Scope, Nature and Importance)

सामाजिक मनोविज्ञान : एक परिचय
(Social Psychology : An Introduction)

सामाजिक मनोविज्ञान का मानव जीवन से गहरा सम्बन्ध है। मानव जीवन के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न सामाजिक विज्ञानें हैं। उदाहरण मानव जीवन के सामाजिक पहलू का अध्ययन करने के लिए समाजशास्त्र, मानव जीवन के ऐतिहासिक पहलू का अध्ययन करने के लिए इतिहास, मानव जीवन के आर्थिक पहलू का अध्ययन करने के लिए अर्थशास्त्र एवं मानव जीवन के मनोवैज्ञानिक पहलू का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान आदि सामाजिक विज्ञानें हैं। सामाजिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है जो मानव जीवन के सामाजिक मनोवैज्ञानिक पहलुओं का अध्ययन करता है। सामाजिक मनोविज्ञान का इतिहास बहुत प्राचीन एवं व्यापक है। सामाजिक मनोविज्ञान की जड़ें पुरातन में ही खोजी जा सकती है भले ही इसके वर्तमान रूप के विकास को वर्तमान काल की देन ही माना जा सकता

SAMPLE

है। सामाजिक मनोविज्ञान मानव प्रकृति एवं व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। भारत के सन्दर्भ में यदि देखा जाए तो यह ज्ञात होता है कि सामाजिक मनोविज्ञान का अस्तित्व अति प्राचीन काल से रहा है। विभिन्न भारतीय धार्मिक ग्रंथों, वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत् गीता एवं कौटिल्य के अर्थशास्त्र आदि में ऋषियों, मुनियों मनीषियों एवं विद्वानों ने मानव आचरण से सम्बन्धित नियमों की व्याख्या की है। ये धारणाएँ सामाजिक मनोविज्ञान की विषय–वस्तु ही प्रकट करती हैं। इससे यह पता चलता है की सामाजिक मनोविज्ञान का अस्तित्व अति प्राचीन काल से चला आ रहा है।

सामाजिक मनोविज्ञान का भावार्थ (Meaning of Social Psychology)

'सामाजिक मनोविज्ञान' को व्यक्तियों के व्यवहार का वैज्ञानिक निरूपण करने वाला एक शास्त्र माना गया है। यह समाज में मनुष्य के व्यवहार के अध्ययन से सम्बन्धित एक नवीन विज्ञान है। सामाजिक मनोविज्ञान को संक्षेप में समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान के मध्य की विभाजक–रेखा कहा जाता है। इस विज्ञान के अन्तर्गत व्यक्ति की प्रतिक्रियाएँ एवं उनके सम्बन्धों का जो सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्त्यों के एक–दूसरे के साथ पारस्परिक क्रियाओं द्वारा उत्पन्न होते हैं, उनका अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार इसे समाज में व्यक्ति के व्यवहार का विज्ञान या सामाजिक उद्दीपन की परिस्थिति से सम्बन्धित व्यक्ति के व्यवहार के रूप मे भी निरूपित किया गया है।

सामाजिक मनोविज्ञान के अर्थ को स्पष्ट करते हुए क्रेच एवं क्रचफील्ड ने 'Theory and Problems of Social Psychology (1948)' में कहा है कि ''सामाजिक मनोविज्ञान समाज में व्यक्ति के प्रत्येक पहलू से सम्बन्धित है।''

इसी प्रकार राम आहूजा ने भी अपनी पुस्तक 'Nature and Subject- matter of Social Psychology' में भी कहा है कि ''सामाजिक मनोविज्ञान मानव का उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृश्य में अध्ययन करता है अथवा यह मानव की सामाजिक प्रकृति का अथवा पारस्परिक

SAMPLE

क्रिया करने वाले व्यक्ति का अध्ययन करता है।

''सामाजिक मनोविज्ञान के अर्थ को स्पष्ट करते हुए बी. कुप्पुस्वामी ने 'An Introduction to Social Psychology (1972)' में लिखा है कि ''सामाजिक मनोविज्ञान में मूलतः सामाजिक व्यवहार के विभिन्न रूपों की विशेषताओं का अध्ययन करने का प्रयास किया जाता है।'' इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानव की सामाजिक प्रकृति, एक व्यक्ति की अन्य व्यक्तियों के साथ प्रतिक्रिया, विभिन्न समूहों में उसका व्यवहार, उसकी सामाजिक स्वीकृति की चाहत, सामाजिक समूहों के प्रति मनोवृत्ति के अध्ययनों को शामिल किया जाता है।

सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषाएँ (Definitions of Social Psychology)

सामाजिक मनोविज्ञान समाज में मनुष्य के व्यवहार के अध्ययन से सम्बन्धित एक नवीन विज्ञान है। इसकी परिभाषा विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न प्रकारों से दी है। इनमें कुछ प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं –

क्लाइनबर्ग ने अपनी पुस्तक 'Social Psychology' (1954) में सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''सामाजिक मनोविज्ञान को व्यक्ति की उन क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन कहकर परिभाषित किया जा सकता है जो अन्य व्यक्तियों के प्रभाव से घटित होती है। (Social Psychology may be defined as the scientific study of activities of the individual as influenced by other individuals.) ।''

किम्बाल यंग ने 'A Handbook of Social Psychology (1953)' में सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, ''सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों की पारस्परिक अन्तःक्रियाओं और इस अन्योन्यक्रिया के परिणामस्वरूप व्यक्त्यिों के विचारों, भावनाओं, संवेगों, और आदतों का अध्ययन करता है (Social Psychology is the study of the persons in their interactions with one another and with reference to the effect

of this inter-play upon the individual's thoughts, feelings, emotions and habits) ।"

शेरिफ एवं शेरिफ ने 'An Outline of Social Psychology (1969)' मे सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित के सन्दर्भ में कहा है कि '' सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक उत्तेजक परिस्थितियों के सन्दर्भ में व्यक्त्यों के अनुभव एवं व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है (Social Psychology is a scientific study of the experience and behavior of individuals in relation to social stimulus situations) ।"

कुप्पूस्वामी ने 'An Intoducation to Social Psychology (1972)' में सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा इन शब्दों में दी है, ''हम सामाजिक मनोविज्ञान को ज्ञान की उस शाखा के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जो सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्तियों के एक–दूसरे के साथ अन्तःक्रियाओं से उत्पन्न सम्बन्धों का अध्ययन करता है (We may, therefore, define Social Psychology as the branch of knowledge which studies the relationship arising out of the interactions of individuals with each other in social situations) ।"

अकोलकर ने अपनी पुस्तक 'Social Psychology (1959)' में सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा इन शब्दों में दी है, 'सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक पर्यावरण के विशिष्ट सन्दर्भ मे व्यक्ति के मानसिक जीवन एवं व्यवहार का अध्ययन है (Social Psychology is the study of man's mental life and behaviour with specific reference to his social environment) ।"

ऑलपोर्ट ने अपनी पुस्तक 'Social Psychology (1985)' में सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक परिस्थितियों के अन्तर्गत दूसरे व्यक्तियों के साथ सम्बन्धों में व्यक्तियों के सम्बन्धों के सम्बन्ध में व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन है (Social Psychology is the study of behavior of individuals in their relations to other individuals in Social Situations) ।"

रॉस ने अपनी पुस्तक 'Social Psychology (1977)' में सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''सामाजिक मनोविज्ञान

ज्ञान की वह शाखा है जो मनुष्य और उसके पर्यावरणीय समाज के बीच मानसिक अन्योन्यक्रिया का अध्ययन करती है (Social Psychology is the branch of knowledge that deals with the psychic interplay between man and his environing society) ।"

ब्रिट ने 'Social Psychology of Modern Life (1947)' में सामाजिक मनोविज्ञान को इन शब्दों में परिभाषित किया है ''सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक परिस्थिति के अन्तर्गत तथा अन्य व्यक्तियों के प्रति प्रतिक्रियाओं के सन्दर्भ में व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन है (Social Psychology is the study of the behaviour of individuals in their reactions to other individuals and in social situation) ।"

लिण्डग्रीन ने 'An Introducations to Social Psychology (1974)' में सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए बताया है कि ''सामाजिक मनोविज्ञान व्यवहारपूरक प्रक्रियाओं, कारणात्मक कारकों तथा व्यक्तियों के बीच की और समूहों के बीच की अन्तःक्रियाओं के परिणामों से सम्बन्धित है। (Social Psychology is concerned with the behavioural processes, causal factors and results of interactions amoung persons and groups) ।"

वोरशैल एवं कूपर ने 'Understanding Social Psychology' में सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषा इस प्रकार सें दी है, ''सामाजिक परिस्थितियों द्वारा व्यक्तियों को प्रभावित होने की रीतियों का अध्ययन ही सामाजिक मनोविज्ञान है।''

रॉबर्ट बी जाजोन्क ने 'Social Psychology An Experiment Approach (1966)' में सामाजिक मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के मध्य में व्यवहारिक निर्भरता से अपना सम्बन्ध रखता है।''

एल.एल.बर्नार्ड ने 'Encyclopaedia of Social Sciences (1967)' में सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा इस प्रकार से दी है, ''सामाजिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा के रूप में उन वैयक्तिक प्रायुत्तरों का अध्ययन है, जो सामाजिक अथवा सामूहिक परिस्थितियों से उत्पन्न उत्तेजनाओं से परिसीमित होते हैं, समाजशास्त्र अथवा सामूहिक मनोविज्ञान

SAMPLE

की एक शाखा के रूप में यह सामूहिक प्रत्युत्तरों अथवा समूहों या अन्य समुदायों के व्यवहार का अध्ययन करता है।''

सामाजिक मनोविज्ञान का विषय–क्षेत्र (Scope of Social Psychology)

विषय क्षेत्र का तात्पर्य उस सीमा से है जहाँ तक उस विषय की पहुँच है। आधुनिक युग में सामाजिक मनोविज्ञान अपना व्यापक तथा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। विभिन्न परिभाषाओं के अवलोकन से ही इसके विषय–क्षेत्र की व्यापकता का आभास हो जाता है। इसके अन्तर्गत वह सब आता है जिसका कोई न कोई सामाजिक–मनोवैज्ञानिक (Socio-Psychological) आधार होता है। व्यक्ति के सभी सामाजिक व्यवहारों और क्रियाकलापों का कोई न कोई मनोवैज्ञानिक आधार होता है, जो कि वास्तविक सामाजिक परिस्थितियों से घटित होता है। इस प्रकार सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन–क्षेत्र मानव जीवन के आदि से अन्त तक फैला है। सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत एक ओर समाज की प्रकृति, संरचना एवं अन्तःक्रियात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है और दूसरी ओर व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक आधारों का भी अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार सामाजिक मनोविज्ञान के विषय–क्षेत्र के अन्तर्गत मूल–प्रवृत्तियों, प्रेरणाओं, अनुकरण, समूह, प्रथा एवं परम्परा, समाजीकरण, धर्म, व्यक्तित्व, नेतृत्व, जनमत, प्रचार, फैशन, युद्ध एवं क्रान्ति जैसे विभिन्न एवं बहुरूपी पक्षों का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र को विभिन्न सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने अपने–अपने दृष्टिकोण से स्पष्ट किया है। इनमें से कुछ प्रमुख सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के दृष्टिकोण निम्नलिखित हैं–

ऑटो क्लाइनबर्ग ने 'Social Psychology (1954) में सामाजिक मनोविज्ञान के विषय–क्षेत्र मे मुख्यतः इन विषयों को सम्मिलित किया है।

(i) सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत विभिन्न मानव समूहों के बीच होने वाली अन्तःक्रियाओं, समूह गतिशीलता और नेतृत्व का अध्ययन किया जाता है।

(ii) सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत सामान्य मनोविज्ञान तथा सामाजिक मनोविज्ञान के पारस्परिक सम्बन्धों की व्याख्या की जाती है।

(iii) सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा ही किसी बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है और वह एक सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित होता है। साथ ही सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत उन सांस्कृतिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जाता है, जिनमें बच्चे का पोषण और विकास होता है। निष्कर्षतः सामाजिक मनोविज्ञान के विषय–क्षेत्र के अन्तर्गत समाजीकरण, संस्कृति और व्यक्तित्व के पहलू का अध्ययन किया जाता है।

(iv) इसे विज्ञान के अन्तर्गत 'सामाजिक व्याधिकीय (Social Pathology) के विभिन्न विषयों जैसे बाल–अपराध, सामान्य–अपराध, मानसिक अस्वाभाविकता, औद्योगिक संघर्ष आदि का अध्ययन किया जाता है।

(v) इस विज्ञान के विषय–क्षेत्र के अन्तर्गत मनोवृत्ति, जनमत, प्रचार, विचारों का आदान–प्रदान आदि भी आता है। सामाजिक मनोविज्ञान यह देखने का प्रयत्न करता है कि मनोवृत्तियों का विकास कैसे होता है? विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम क्या है? प्रचार का मनोविज्ञान क्या है? प्रचार के माध्यम से जनमत, व्यवहार, मनोवृत्ति आदि में कौन–कौन से प्रभाव उत्पन्न होता हैं।

(vi) सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत वैयक्तिक एवं सामूहिक भिन्न्ताओं का अध्ययन किया जाता है। साथ ही इस विज्ञान के अन्तर्गत राष्ट्रीय चरित्र का भी अध्ययन किया जाता है।

(vii) सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र दिन–प्रतिदिन व्यापक होता जा रहा है। वर्तमान समय में इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर राजनीतिक व्यवहारों का भी अध्ययन किया जाने लगा है।

SAMPLE

राबर्ट फ्रमकिन (Robert Frumkin) ने सामाजिक मनोविज्ञान के विषय–क्षेत्र को 13 भागों में विभाजित किया है जो निम्नलिखित हैं–

(i) मनुष्य के सम्बन्ध में परिपक्व विचारधारा का विकास (The Development of a Mature Conception of Man)– मनुष्य का अध्ययन करने वाले अन्य विज्ञानों में मनुष्य की कुछ विशिष्ट विशेषताओं एवं पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनुष्य के समस्त क्रियात्मक व्यवहारों का अध्ययन करके उसके वास्तविक रूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

(ii) समाजीकरण प्रक्रिया की गतिशीलता (The Dynamics of Socialization Process)– समाजीकरण की प्रक्रिया के द्वारा एक जैविकीय प्राणी का एक सामाजिक प्राणी के रूप में परिवर्तित होने की घटना का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के अध्ययन में यह विज्ञान मानवशास्त्रियों द्वारा किए गए अध्ययनों की सहायता लेता है, क्योंकि विभिन्न सांस्कृतिक परिस्थितियों में समाजीकरण की प्रक्रिया में सहयोगी कारक अलग–अलग होते हैं।

(iii) सामाजिक अन्तःक्रिया की गतिशीलता (The Dynamics of Interaction)– सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक अन्तःक्रियाओं के विभिन्न स्वरूपों जैसे सहयोग, व्यवस्थापन, सात्मीकरण, प्रतिस्पर्द्धा, विरोध, संघर्ष आदि का अध्ययन करता है।

(iv) संचार की गतिशीलता (The Dynamics of Communication)– मानव व्यवहार एवं विचार संचार के माध्यम द्वारा अत्यधिक प्रभावित होता है। सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत उन विभिन्न संचार साधनों का अध्ययन किया जाता है जिनके द्वारा व्यक्ति एक–दूसरे के बीच अपनी भावनाओं, विचारों आदि का संचार करता है। संचार के साधनों के अन्तर्गत भाषा, समाचार–पत्र, पुस्तकें, पत्रिकाएँ आदि आते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत न केवल संचार साधनों का अध्ययन बल्कि, जनमत, प्रचार, फैशन